Shri Vivekananda Stotram

श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shri Vivekananda Stotram

File name : vivekAnandastotram3.itx

Category : deities_misc, gurudev, rAmakRiShNa, stotra

Location : doc_deities_misc

Author : Brahmachari Medhachaitanya

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramAlA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 12, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्

स जयति जगति स्वामी वन्द्यो वीर विजेतृ-विवेकानन्दः ।
मानुषमोहविवर्जितहृदयो गुरुरिह पूर्णः सिद्धः सदयः ॥ १॥

भुवनेशी बहुसाधनसिद्धं वीरेश्वरसमुदितचिद्देहम् ।
ईशनिमन्त्रितं भूतलजातं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ २॥

भूतपति महादेवनिकायः व्यक्त श्रद्धाभक्ति प्रणयः ।
भारतदुर्गतिदर्शनशीर्णः पारावारोत्तार-विलग्नः ॥ ३॥

श्रीशिवसुन्दरदिव्यज्योतिर्गैरिकमण्डितचिद्घनमूर्तिः ।
धरणिनरगणसुमङ्गलकान्तिः स्वामिविवेकानन्दख्यातिः ॥ ४॥

यतिगणनन्दितभास्वरसूर्यं संयमभूषणविक्रमवीर्यम् ।
नवयुगनायकभारतभानुं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ५॥

धिक्कृत धनिजन नश्वरभोगं प्रज्ञानिर्जितभवगतिरोगम् ।
शिवधीचेतनसेवावादं नमत स्वामिविवेकानन्दम् ॥ ६॥

लोकहितकरसुसाधितकृत्यं कामविवर्जितसञ्चितसत्यम् ।
दुःखनिसूदनविगतद्वन्द्वं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ७॥

दीनजनगणक्लेशविनाशं पतितोत्तारणनीचसनाथम् ।
जीवनदायकतत्त्वालापं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ८॥

शिवमतिपूजा भूतगसेवा सन्ततभक्त्या मानवधर्मा ।
इति नवभावं जगति लपन्तं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ९॥

विवेकवैराग्योभयसाध्यं मायापाशच्छेदनकार्यम् ।
करतलगतसुलभं खलु तत्त्वं स्तौमि नु विवेकानन्द सिद्धम् ॥ १०॥

गुरुर्बोधिव्याप्तात्समुपगमनेनैव यमिनां
वरेण्यः सम्प्राप्तः श्रुतिगतपदार्थं सुगहनम् ।

प्रसङ्ख्यानाध्यास प्रतिपदसकृत्त्तत्वविदसौ
विवेकानन्दो नः शरणमिह भूयात्तनुभृताम् ॥ ११ ॥

इति ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं
“श्रीमत्स्वामिविवेकानन्दस्तोत्रम्” सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

Shri Vivekananda Stotram

pdf was typeset on June 12, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*